International Journal of Sanskrit Research 2019; 5(4): 36-38

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2019; 5(4): 36-38
© 2019 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 07-05-2019
Accepted: 13-06-2019

डॉ0 राजेश कुमार यादव
एसोसिएट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, वर्धमान कॉलेज, बिजनौर, उत्तर प्रदेश, भारत

Correspondence
डॉ0 राजेश कुमार यादव
एसोसिएट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, वर्धमान कॉलेज, बिजनौर, उत्तर प्रदेश, भारत

तस्मै पाणिनये नमः

डॉ0 राजेश कुमार यादव

प्रस्तावना

व्याकरण–शास्त्र को वेद पुरुष का उत्तमांग माना गया है–''मुखं व्याकरणं– स्मृतम्''। व्याकरण शास्त्र का मुख्य विषय है शब्दानुशासन। भारतीय मनीषा ने व्याकरण–शास्त्र को भी दर्शन की कोटि में रखा है। सभी व्याकरण–शास्त्री 'शब्द' को ब्रह्म मानते हैं। भाष्यकार भगवान् पतंजलि ने ऋग्वेद के अधोलिखित मंत्र में व्याकरण के स्वरूप की अलंकारिक व्याख्या की है–

चत्वारि श्रृंगा त्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो अस्य।
त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महोदेवा मर्त्याम् आविवेश।।[1]

अर्थात् इस शब्द ब्रह्म रूपी आलौकिक पुरुषरूप वृषभ के नाम, आख्यात, डपसर्ग, निपात ये चार श्रृंग हैं। भूतकाल, वर्तमानकाल और भविष्यकाल–ये तीन पाद हैं। सुप् एवं तिङ् दो सिर हैं। सात विभक्तियाँ ही सात भुजाएँ हैं। वर्णोच्चारण की दृष्टि से यह उर कण्ठ एवं शिर इन तीन स्थानों से बँधा है। अतः अपने प्रयोक्ता एवं ज्ञाता की कामनाओं की वर्षा करने वाला यह महान देवस्वरूप चित्तरूप 'शब्द–ब्रह्म' शब्द करता हुआ मनुष्य में प्रविष्ट हुआ है।

ऋग्वेद के इसी मंत्र के आधार पर वैय्याकरणों का शब्दब्रह्मवादी परम्परा आरम्भ हो गई। आचार्य भर्तृहरि ने अपने वाक्यपदीय में व्याकरण शास्त्रीय विवेचना को दर्शन के रूप में ही मण्डित कर दिया है। वे कहते हैं–

अनादि निधनं ब्रह्म शब्दरूपं यदक्षरम्।
विवर्तते अर्थभावेन प्रक्रिया जगतो यतः।।[2]

अर्थात् शब्द–तत्त्व ही अक्षर अनादि ब्रह्म है। यह अर्थ के रूप में निवर्तित हो समस्त शब्द जगत् में कार्य रूप में परिणत हो जाता है। जिससे यह सारस्वत जगत् की प्रक्रिया प्रचलित हो जाती है। उपनिषद कहता है–

द्वे विद्ये वेदितव्ये तु शब्दब्रह्म परं च यत्।
शब्दब्रह्मणि निष्णातः परं ब्रह्माधिगच्छति।।[3]

श्रीमद्भागवत पुराण में भी वेदव्यास द्वारा 'शब्द–ब्रह्म के स्वरूप का निर्धारण करते हुए कहा गया है–

शब्दब्रह्मात्सस्तस्य व्यक्ताव्यक्तातमनपरः।
ब्रह्मभावयति विततो नश्नानांशत्वब्रह्मितः।।[4]

भागवत पुराण के इस वर्णनानुसार शब्द–ब्रह्म का ज्ञान ही परब्रह्म परमात्माके साक्षात्कार के लिए माध्यम बनता है। महाभाष्यकार भगवान् पतंजलि ने एक श्लोक उद्धृत कर वाणी के स्वरूपों को प्रकट किया है वे कहते हैं–

चत्वारि वाक् परिमिता पदानि तानि विदुर्ब्राह्मणा ये मनीषिणः।
गुहा त्रीणि निहिता नेङ्गयन्ति तुरीयं वाचो मनुष्या वदन्ति।।[5]

अर्थात् वाणी चार पदों में परिमित है।वाणी के इन चार स्वरूपों में से 'परा' 'पश्यन्ति', और 'मध्यमा' ये तीनों तो सूक्ष्म रूप से विद्यमान हैं तथा चौथे 'तुरीय –वाक्' को मनुष्य उच्चारित करते हैं। इसी शब्द–ब्रह्म के व्याख्याता हैं मेरे आलोच्य महर्षि 'पाणिनि। पाणिनि से पूर्व प्राचीन काल में 8 प्रसिद्ध प्रकाण्ड विद्वान व व्याकरणशास्त्री हुए हैं–

''इन्द्रश्चन्द्रः काशकृत्स्नापिशली शाकटायनः।
पाणिन्यमरजैनेन्द्रा जयन्त्यष्टादिशब्दिकाः।।''[6]

1. ऐन्द्रव्याकरण

'ऐन्द्रव्याकरण ग्रन्थ के कर्त्ता देवराज इन्द्र हैं।यह तैत्तिरीय संहिता में उपलब्ध हुआ है।

2. चान्द्रव्याकरण

चान्द्र व्याकरण आज भी उपलब्ध होता है तथा यह व्याकरण ग्रन्थ 6 अध्यायों में विभक्त है।

3. काश्कृत्स्न व्याकरण

इस ग्रन्थकी चर्चा महर्षि पाणिनि ने अपने व्याकरण ग्रन्थ अष्टाध्यायी के प्रथम अध्याय के प्रथम पाद में की है।

4. आपिशली व्याकरण

इस ग्रन्थ की चर्चा आचार्य पाणिनि ने अपने अष्टाध्यायी के 6 अध्याय के प्रथम पाद में की है।

5. शाकटायन व्याकरण

इसके रचयिता आचार्य शाकटायन हैं। महर्षि पाणिनि ने शाकटायन को नामतः उल्लिखित किया है।

6. अमर व्याकरण

अमर सिह ने भी इस महान व्याकरण ग्रन्थ की रचना की थी।

7. जैनेन्द्र व्याकरण

पूज्यपाद नाम के किसी प्रसिद्ध विद्वान जिनका दूसरा नाम देवनन्दि भी है उन्हीं की यह रचना जैनेन्द्र व्याकरण है।

8. पाणिनि व्याकरण

अष्टम पाणिनि व्याकरण तो सुप्रसिद्ध ही है। आचार्य पाणिनि दिव्य शाक्ति सम्पन्न प्रकाण्ड विद्वान एवं शाब्दिक थे। उदन्त के अनुसार भगवान् शिव ने स्वयं डमरू (ढक्का) बजाकर इन्हें माहेश्वर सूत्रों का उपदेश दिया था–

नृत्तावसाने नटराजराजो ननाद ढक्कां नवपंचवारम्।
उद्धर्तुकामः सनकादिसिद्धान् एतद्विमर्शे शिवसूत्रजालम्।।[7]

भगवान् शिव के चौदह बार बजाये गये इस डमरू (ढक्का) से ही 14 माहेश्वर सूत्रों की उत्पत्ति हुई इन सूत्रों के विन्यास, ताल, लय, गति से यह प्रमाणित होता है कि ये भगवान् आशुतोष की ताण्डवीय ऊर्जा से प्रादुर्भूत हुए हैं। यही पाणिनि व्याकरण के मूलाधार हैं। पाणिनीय शिक्षा में कहा गया है–

येनाक्षर समाम्नायमधिगम्य महेश्वरात्।
कृत्स्नं व्याकरणं प्रोक्तं तस्मै पाणिनये नमः।।[8]

अतः उक्त समस्त ज्ञात अज्ञात व्याकरण ग्रन्थों में महर्षि पाणिनि व्याकरण सर्वाधिक प्रचलित एवं लोकप्रिय हुआ है। इसकी दीर्घ परम्परा ने आज तक अनेकों शताब्दी के काल की सीमा को लाँघकर अपनी व्याप्ति बना रखी है।

आज का युग अध्ययन की दृष्टि से अत्यधिक व्याकरणिक एवं वैज्ञानिक है। वह तर्कसम्मत अध्ययन के प्रति विशेष आकृष्ट तथा प्रभावित होता है। पाणिनि का व्याकरण इतना अधिक वैज्ञानिक एवं तर्कसंगत है तथा उसमें इतनी प्रभावोत्पादकता और आकर्षण विद्यमान है कि भारतवर्ष ही नहीं वरन् सम्पूर्ण विश्व में पाणिनि को एवं उनके ग्रन्थ अष्टाध्यायी को सर्वाधिक आदर की दृष्टि से देखा जाता है।

भगवान् पाणिनि का इतना अलौकिक प्रभाव है कि इनके व्याकरण को महर्षि कात्यायन, भगवान् पतंजलि, आचार्य वररुचि, महामहिम व्यादि जैसे अध्येता उपलब्ध हुए।

महर्षि पाणिनि द्वारा रचित व्याकरण ग्रन्थ अपनी सुस्पष्टता के कारण निर्विवाद है। युगों–युगों से प्रवाहित होने वाली पतितपावनी स्वच्छन्द निर्मल भाषा–नदियों के एक–एक शब्द बिन्दु की शुद्धता की व्यवस्था प्रस्तुत कर देना कितना व्यापक एवं महत्त्वपूर्ण कार्य है। अतः इस समुद्र लंघनीयवत् दुर्लभ कार्य का कौन अनुभव नहीं कर सकता।

अष्टाध्यायी एक लघुकाय एवं उच्चकोटि का ग्रन्थ है। जिसमें 3983 सूत्र हैं। अष्टाध्यायी में आठ अध्याय हैं प्रत्येक अध्याय में 4 पाद हैं। कुल सम्पूर्ण ग्रन्थ में 32 पाद हैं। इस प्रकार अष्टाध्यायी में 8 अध्याय, 32 पाद और सब मिलाकर लगभग 4000 सूत्र हैं।

सूत्रों का उपयोग पद सिद्धि तथा वाक्य प्रयोग के लिए होता है। सूत्र का लक्षण करते हुए कहते हैं–

अल्पाक्षरमसन्दिग्धं सारवद्विश्चतोमुखम्।
अस्तोभमनवद्यन्च सूत्रं सूत्रविदो विदुः।।[9]

अर्थात् अल्पअक्षर वाला, असन्दिग्ध एवं गंभीर अर्थ को सूचित करने वाला अनिंद्य वाक्य सूत्र कहलाता है। कुछ विद्वान कहते हैं कि– अष्टाध्यायी में 6 प्रकार के सूत्र पाये जाते हैं तथा सूत्र को संज्ञा नाम से भी अभिहित किया जाता है।

संज्ञा च परिभाषा च विधिर्नियम एव च।
अतिदेशोऽधिकारश्च षड्विध सूत्रलक्षणम्।।[10]

अष्टाध्यायी में महर्षि पाणिनि ने समाज के सर्वाधिक क्रिया–कलापों को भी निबद्ध कर डाला है। वैदिक एवं लौकिक दोनों भाषाओं के प्रत्येक सूत्र का विवरण प्रस्तुत किया है। इतना ही नहीं अनेकों सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, साहित्यिक, ऐतिहासिक आदि सभी को अपने व्याकरण द्वारा पाणिनि ने शाश्वत जीवन प्रदान किया है।

आचार्य पाणिनि के व्यक्तित्त्व की व्यापकता भी इतनी उत्कृष्ट है कि उन्होंने अपने पूर्ववर्ती वैयाकरणों का बहुत सम्मान के साथ उल्लेख किया है साथ ही उनके मत को भी अपने व्याकरण में मान्यता भी प्रदान कर दी है।

''लोपः शाक्ल्यस्य''[11]

सूत्र में शाकल्य मुनि के मत में अ वर्ण जिसके पूर्व में हो तथा पद के अन्त में 'अ' हो वहाँ य, व का लोप विकल्प से होता है। इस प्रकार के सूत्रों को भी महर्षि पाणिनि ने अपने ग्रन्थ में अनेक स्थलों पर ससम्मान अभिव्यक्त किया है।

''अवङ्गस्फोटायनस्य''[12]

इस सूत्र में शाकटायन का भी उल्लेख महर्षि पाणिनि ने किया है। महर्षि पाणिनि के व्याकरण ग्रन्थ के वार्तिककार हैं– आचार्य कात्यायन। तदनन्तर भाष्यकार भगवान् पतंजलि ने आचार्य कात्यायन के वार्तिकों पर जो व्याख्या प्रस्तुत की उसका महत्त्व अक्षुण्ण है।

भगवान् पाणिनि को अपने व्याकरण के अध्ययन के लिए छः साधनों का आश्रय लेना पड़ा–

1. प्रत्याहार, 2. अनुबन्ध, 3. गण, 4. संज्ञा, 5. अनुवृत्ति, 6. अधिकार

आचार्य पाणिनि ने वस्तुतः न केवल भारत में अपितु सम्पूर्ण विश्व में व्याकरण के ज्ञान के दीप को प्रज्ज्वलित करके जगत् के अज्ञानान्धकार को दूर करने का प्रयास किया है।

भारतवर्ष के ज्ञान ज्योति की समस्त शाखाओं की जो परिपूर्णता है उसके पीछे संस्कृत जैसी सर्वांग पूर्ण देश–काल जयनी भाषा का अत्यधिक महत्त्व है।

स्वयं भगवान् पाणिनि का महाबुद्धि कौशल यह व्याकरण शास्त्र है। उस पर भी महामुनि कात्यायन, पतंजलि आदि जैसे प्रकाण्ड व्याकरणकारों ने उनके महत्त्व को परिवर्द्धित कर दिया है। आचार्य पाणिनि ने स्वयं व्यापक शब्द व्यवहार क्षेत्र को अपने सूत्र शैली के माध्यम से पिरो कर सूक्ष्म एवं रमणीय माल्य रूप प्रदान कर दिया है। इस प्रकार महर्षि पाणिनि ने एक ही सूत्र में निखिल विश्ववर्ती सम्मानित संस्कृतियों की भाषाओं को समन्वित कर दिया है जो प्रत्यक्षरूप से किसी विद्वान द्वारा की गई उच्चकोटि की व्याकरण की व्यापकशीलता को व्यक्त करता है।

काचं मणिं कान्चनमेकसूत्रे
ग्रथ्नासि बाले! किमिदं विचित्रम्?
विचारवान् पणिनिरेकसूत्रे
श्वानं युवानं मघवानमाह।।[13]

इसके बाद उनका अनुवर्त्तन करने वाले व्याकरणकारों ने, ऋषियों ने अपनी सूक्ष्म मति से उन शब्दों को जिन्हें पाणिनि ने किन्हीं कारणों से छोड़ दिया था उनको प्रस्तुत कर दिया। व्याकरण ग्रन्थ में प्रकरणों को विभाजित करने का क्रम जो महर्षि पाणिनि ने रखा था वह भी बड़ा वैज्ञानिक है। यदि कोई तद्धित प्रत्ययों का अध्येता जब प्रत्ययों का ज्ञान करना चाहता है तो उससे तृप्त हो जाता है। भगवान् पाणिनि अत्यंत संक्षिप्त रूप में एक विस्तृत भाषा का अति सुसंगत एवं सुदृढ़ व्याकरण लिखने के लिए विश्व में सुप्रसिद्ध हो गये।

उनके ग्रंथ में वैज्ञानिक विवेचना की पूर्णता तथा शैली की अनुपमता दोनों ऐसे मिली हैं कि विश्व की अन्य किसी भी भाषा में इससे मुकाबला करने वालों में कोई भी विद्वान इस विषय पर अन्य कोई व्याकरण ग्रन्थ नहीं प्रस्तुत कर सका।

व्याकरण शास्त्र का जितना गूढ़ अध्ययन, जितनी विस्तृत एवं सूक्ष्म विवेचना संस्कृत भाषा में हुई है उतनी अन्यत्र कहीं नहीं। अतएव संस्कृत भाषा में व्याकरण की प्रमुखता है। इसी से व्याकरण को वेद का मुख भी कहा गया है। वैदिक युग से ही शब्द की मीमांसा की ओर भारतीय मनीषियों की बुद्धि दौड़ती रही है। शब्द, व्याकरण पर मीमांसा करने वाले मनीषियों ने वेद, उपनिषद, शब्दशास्त्र और मीमांसा ग्रन्थों पर प्रातिशाख्यों की रचना की है। इसके उपरान्त शब्द निरूक्ति सम्बन्धित सबसे उत्कृष्ट, सम्पूर्ण, व्यापक एवं महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ आचार्य यास्क मुनि विरचित निरूक्त साहित्य है। प्रातिशाख्य ग्रन्थों ने शब्दानुशासन में प्रवेश कराया और पाणिनि ने उसके सम्पूर्ण एवं विस्तृत व्यापक तथा स्थायी रूप को उपस्थिापित किया। इसलिए यास्क इन दोनों सिरों के मध्य की प्रगति के स्तम्भ हैं। यास्क ने ही सबसे पहले शब्द के नाम, आख्यात, उपसर्ग एवं निपात यह चार भेद प्रस्तुत किये और यह सिद्ध करने का स्तुत्य प्रयास किया कि सारे शब्दों का आधार धातु है। इसी सिद्धान्त पर महर्षि पाणिनि के अष्टाध्यायी ग्रन्थ पर व्याकरणशास्त्र और आधुनिक निरूक्त विज्ञान आश्रित हैं। संक्षेप में विश्व के समस्त व्याकरण शास्त्रों में पाणिनि का स्थान सर्वोपरि है।

''यद्यपि बहु नाधीषे तथापि पठ पुत्र व्याकरणम्।
स्वजनो श्वजनो माऽभूत्सकलं शकलं सकृत्शकृत्।।[14]

–संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका–डा0 बाबूराम सक्सेना

तस्मै पाणिनये नमः।

सन्दर्भ

1. ऋग्वेद : 4/58/3
2. वाक्यपदीय–ब्रह्मकाण्ड। भागवत सुधा–करपात्रीजी महाराज, पृ0 106
3. मैत्रीयोपनिषद–6/22
4. श्रीमद्भागवत पुराण
5. महाभाष्य–पतंजलि 13.9
6. बोपदेव व्याकरण
7. लघुसिद्धान्त कौमुदी भूमिका भाग–1
8. पाणिनीय शिक्षा
9. पाणिनीय शिक्षा
10. पाणिनीय शिक्षा/अष्टाध्यायी
11. सारकौमुदी 8.3.19
12. अष्टाध्यायी 6.1.123
13. श्वयुवमघोनामतद्धिते 6/4/133
14. संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका–डा0 बाबूराम सक्सेना